UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शिक्षा दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सराहनीय भागीदारी

डॉ. रमेश चन्दर
सहायक प्रोफेसर, संत हरिदास कॉलेज ऑफ़ हायर एजुकेशन नजदीक एयर फ़ोर्स स्टेशन
बैनी कैंप नजफगढ़ नई दिल्ली

सारांश

अब्दुल कलाम का पूरा नाम डॉ अवुल पाकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम था। अब्दुल कलाम ने विज्ञान के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान दिया। अग्नि और पृथ्वी मिसाइलों के निर्माण में मदद की जिसकी वजह से अब्दुल कलाम को मिसाइल मैन के नाम से जाने जाते है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो और भारत को परमाणु शक्ति बनाने में में उनकी महत्वपूर्ण भागीदारी रही है। डॉ एपीजे अब्दुल कलाम की उपलब्धियों के लिए उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

मुख्य शब्द: डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, शिक्षा दर्शन, शैक्षिक, वर्तमान परिप्रेक्ष्य

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति को शारिरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करती है। इसके माध्यम से वर्तमान जीवन और आने वाली पीढ़ी के जीवन को सुगम एवं आनन्दायक बनाने में सहायता मिलती है। सफल जीवन के लिए शिक्षा बहुत उपयोगी है। प्राचीन समय से ही हमारी शिक्षा व्यवस्था में मुल्यों एवं कौशल आधारित शिक्षा को एक वृक्ष की भाँती पौषित किया हैं, जिससे वर्तमान पीढी के साथ–साथ भावी पीढ़ी को भी उसका लाभ प्राप्त हो सके। वर्तमान समय में शिक्षा के विविधता पायी जाती है। पाठ्यक्रम की अधिकता तथा उसमें विभिन्नता होने के कारण कौशल आधारित शिक्षा का चयन करन में कठिनाई आती है। विज्ञान और तकनीकि के इस युग में शिक्षा के समक्ष अनेकानेक चुनोतियाँ प्रस्तुत की है। शिक्षा ज्ञान के अनवरत विकास से लाभान्वित होकर निरन्तर परिवर्तनशील बनी रही है। कौशल आधारित शिक्षा व्यक्तिगत होने के साथ–साथ समाज व राष्ट्र से भी संबन्धित होते है तब व्यक्ति में अन्तर्नीहित सम्भावनाओं को विकसित कर उसे पूर्ण मानव बनाने का प्रयास किया जाता है। तो वह क्रियात्मक या व्यक्तिगत होती है। परन्तु व्यक्ति में निहीत क्रियात्मकता का प्रयोग समाज व देश के हित में हो तो वह सामाजिक क्रियात्मकता होती है। क्रियात्मकता व्यक्ति व समाज की सोच विचार व आचरण में प्रकट होती है। भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था क्रियात्मक कार्य को करने में विमुख हो चुकी है। इस कारण छात्र न तो पूर्ण रूप से शिक्षित हो पाता हैं औन ना ही कौशल अर्जित कर पाता है। शिक्षा में क्रयात्मकता, स्पनात्मकता व सकारात्मकता बनने के लिए नये विचारो को प्रयोग व व्यवहार में बदलने की आवश्यकता हैं, जिसके

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

लिए अब्दुल कलाम के शिक्षा दर्शन और शैक्षिक विचारो को वर्ततान परिप्रेक्ष्य में निवेश की इच्छा रखिए, खासकर अपनी कल्पना की। लक्ष्यों को आसानी से हासिल करने के लिए शिष्टाचार के नियमों को सिखना आवश्यक हैं जिससे बालक स्वंय पराजय की और जाने वाले रास्ते से बच सकते है। यदि बालक स्वंय चेतना के साथ क्रयात्मकता को बाल्यावस्था से ही सिखेगा तो जीवन में उसे निश्चित ही सफलता मिलेगी। साथ ही साथ जब वह अपनी इच्छा व जिम्मेदारी से कोई काम अपने हाथ में लेगा तो वह एक अच्छा इन्सान बन पायेगा।

शिक्षा से मानव का व्यक्तित्व सम्पूर्ण, विनम्र और संसार के लिए उपयोगी बनता है। सही शिक्षा से. मानवीय गरिमा, स्वाभिमान और विश्व–बंधुत्व में बढ़ोतरी होती है। ये गुण शिक्षा के आधार होते है। अतंतः शिक्षा का उदेद्दय हैं सत्य की खोज। इस खोज का केन्द्र अध्यापक होता हैं, जो अपने विद्यार्थियों को शिक्षा से माध्यम से जीवन में और व्यवहार में सच्चाई की शिक्षा देता है। छात्रों को जो भी कठिनाई हो, जो भी जिज्ञासा हो, जो वो जानना चाहते है, उन सब के लिए उनका अध्यापक पर ही निर्भर करते है। उनके लिए उनका अध्यापक एक तरह से एन्साइक्लोपीडिया हैं जिसके पास सभी प्रश्नो के उत्तर है।

एक अच्छी शिक्षा प्रणाली मे ऐसी क्षमता होनी चाहिए जो छात्रों की ज्ञान प्राप्ति की तीव्र जिज्ञासा को शान्त कर सके। शैक्षणिक संस्थाओं को ऐसे पाठ्यक्रम बनाने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए जो विकसित भारत की सामाजिक और प्रौद्योगिकी संबंधी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो। वर्तमान पाठ्यक्रम में विकास कार्यो की गतिविधियों को अनिवार्यतः स्थान दिया जाना चहिए। ताकि ज्ञान समाज की भावी पीढ़ी पूरी तरह से सामजिक परिवर्तन को सभी पहलुओं के अनुकुल हो सके। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने दो शताब्दी तक अन्तरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में तथा लगभग 20 वर्षों तक रक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में दतचिन्त होकर कार्य किया। इस अवधि में अनेक सफलताऐ व विफलताऐं उनके सम्मुख आई। इस बीच पृथ्वी को लेकर अग्नि तक अनेक विसाइलो का सफल विकास हुआ, जिससे यह स्पष्ट प्रमाणित हो गया की सपना अच्छे प्रबंध–कौशल से यह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। डॉ. अब्दुल कलाम की रक्षा वैज्ञानिक के रूप में उनकी अमूल्य व निष्ठापरक सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए भारत सरकार ने सन् 1981 में पदम भूषण, सन् 1990 ई में पदम् विभूषण और सन् 1998 ई में देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न प्रदान कर उन्हें अलंकृत किया। रक्षा वैज्ञान के क्षेत्र में जब भी किसी का नाम लिया जाऐगा तो पुरोधा भारत रत्न रक्षा वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का नाम सर्वोपरी होगा। भारत राष्ट्र उनकी अपरिमित सेवाओं के लिए सर्वदा ऋणी कृतज्ञ रहेगा। उनकी बाते नयी दिशा दिखाने वाली थी, उन्होने करोड़ो आँखो को बड़े सपने देखना सिखाया। वह कहते थे वह नही जो आप नींद में देखते हैं, यह तो एक ऐसी चीज है जो आपको नींद ही नही आने देती। उनका मानना था की छोटी सोच सही नही होती है। जितना

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

मुमकिन हो उतने खव्वाब देखीए। तरक्की का उनका खुव्वाब शहरों से नही बल्कि गाँव की पंचायतों से शुरू होता था।

अमेरिका मार्केटिंग सोसायटी के अनुसार

''अध्ययन में परिणामों में रूचि रखने वाले व्यक्तियों के समक्ष पर्याप्त विस्तार में प्रस्तुत करना और परिणामों को इस प्रकार व्यवस्थित करना कि प्रत्येक पाठक तथ्यों को समझने और निष्कर्षो की वैद्यता निर्धारण करने में समर्थ हो सके।'

डॉ. अब्दुल कलाम ने आधुनिक शिक्षा क्षेत्र में अपूर्व योगदान दिया है। शिक्षा दर्शन एवं मनोवैज्ञानिक मूल्यों के विकास में उनके साहित्य में निहित तथ्य अत्यन्त सराहनीय है।

दर्शन

1. धार्मिक एकता पर बल देते हुए धार्मिक क्रिया कलापों में नियमितता को महत्वपूर्ण मानते है।

2. विपत्ति के समय कठोर परिश्रम करनी चाहिए विपति हमेशा आत्म विश्लेषण का अवसर प्रदान करती है।

3. समस्या के समाधान हेतु प्रयत्न करने वालों की हार नहीं होती है।

4. अपने माता–पिता का आशीर्वाद बहुत महत्वपूर्ण है और माता–पिता ही हमारे आदर्श है।

5. मनुष्य को अंहकार का त्याग करना अत्यन्त आवश्यक है।

6. सच्चे मनुष्य में परोपकारिता, मानवतावादी एवं धर्म निरपेक्षता के गुण होते है।

7. अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मेहनत करो और ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करो।

8. जीवन में सादगी व विचारों में उच्चता होनी चाहिए।

9. मनुष्य में निर्णय शक्ति होनी चाहिए जिससे वह तुरन्त निर्णय ले सकें।

10. जो लोग जिम्मेदार, सरल, ईमानदार तथा मेहनती होते है, उन्हें इश्वर द्वारा विशोष सम्मान मिलता है। क्योंकि वे इस पृथ्वी पर उसकी श्रेप्ठ रचना है।

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

11. कम से कम दो गरीब बक्तियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनकी शिक्षा प्राप्ति में मदद करो।

12. किसी के जीवन में उजाला लाओ।

13. दूसरों का आशीर्वाद प्राप्त करों, और अपने माता–पिता की सेवा करो, बड़ो तथा शिक्षकों का आदर करो और अपने देश से प्रेम करो, इनके बिना जीवन अर्थहीन है।

14. ईश्वर की सभी रचनाओं से प्यार करो।

15. देना सबसे उच्च व श्रेष्ठतम गुण हैं, परंतु पूर्णता देने के लिए उसके साथ क्षमा भी होनी चाहिए।

16. हमारे अन्दर ईश्वरीय सुन्दरता का प्रवेश होना चाहिए।

17. प्रत्येक क्षण रचनात्मकता का एक क्षण है। उसे व्यर्थ मत करो।

18. धैर्य तथा सहिष्णुता शक्ति है। उसे खोने मत दो।

19. प्रकृति से सीखों, जहाँ सब कुछ छिपा हुआ है और अपने जीवन को उद्देश्य पूर्ण तथा अर्थ पूर्ण बनाओ।।

20. ये ऑखे इस दुनिया को फिर नहीं देख पाएंगी। अपना बेहतरीन देन का प्रयास्म करो।

शैक्षणिक विचार

क्लाम का "विकसित भारत का सपना" के चार स्तम्भ है

1. उद्यमशीलता की गुणवत्ता में विकास हो।

2. युवा अनुसंधानकर्ता बनें व न्योन्मेष करें एवं जिजासु बने।

3. सरकार के कार्यो के आंक्लन को लेकर सक्रिय विकास करे।

4. नागरिक अधिकारों व कर्त्व्यों का पालन करें। कलाम ने विद्यार्थियों के लिए एक शपथ तैयार की जिसे विद्या अध्ययन के दोरान विद्यार्थी ग्रहण करेगा।

5. हर शिक्षित व्यक्ति 10 अशिक्षतों को शिर्शक्षत व साक्षर व्यक्ति किसी धर्म, जाति व भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं करेंगा।

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

7. पुरुष प्रधान समाज स्त्री शिक्षा एवं अधिकारों को महत्व देंगे।

8. शारीरिक व मानसिक वाधिता से युक्त बच्चों व व्यक्तियों का समाज व परिवार में आदर व समन्वयन करें ताकि ''Knowledge Society'' समावेशित समाज हो सके।

निष्कर्ष

कलाम का शैक्षिक दृष्टिकोण तार्किक, कौशल व वैज्ञानिक दर्शन पर आधारित है। ''मिसाइल मैन' के नाम से विख्यात वैज्ञानिक राष्ट्रपति भारतीय समाज की सम्पन्नता को समाज, राजनीति, शिक्षा, उद्योग इत्यादि में क्रान्तिकारी प्रगति के आधार पर परिवर्तन देखते है, जहाँ मन्द तीत्र गति है। इस प्रकार का शैक्षिक दर्शन भारतीय शिक्षा के वर्तमान स्वरूप की गुणवता का विकास हेतु अति उत्तम है। 4 लाख से अधिक विद्यालयी बच्चों से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित कर कलाम ने नई पीढ़ी को नए सपने व नई राह दिखाई है साथ ही उनके नए विचारों को जानकर शिक्षा दर्शन में उन्हें शामिल किया है। नई सह शताब्द में कलाम ने शिक्षा में सुधार हेतु निम्न मत, दृष्टिकोण तर्क व लक्ष्य रखे है। जो मंद गति से विकासशील भारतीय समाज के लिए वरदान है।

सन्दर्भ

1. बुच. एम. बीः थर्ड सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, वोल्यूम। 1978 – 1983
2. बुच. एम. बीः थिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, वोल्यूम। 1988 – 1992
3. राजस्थान में शिक्षाः सम्प्राप्तियों एवं सम्भावनाएँ। अनुसंधान 1975 – 1988
4. गुड कार्टन बी : एजुकेशन रिसर्च न्यूयार्क ऐप्टलन सेन्चुरी क्राफ्ट्स 1959।
5. कपिल एच. के.: अनुसंधान विधियाँ एच.पी. भार्गव बुक हाऊस आगरा 1998 – 99।
6. माचवे प्रभाकर वः आधुनिक भारत के विचारक, बिहार, हिन्दी ग्रंथ दफ्तुआर अकादमी पटना, 1975 सुरेन्द्र नारायण।
7. टीचर्स जनरल
8. टीचर्स टुडे – नया शिक्षक
9. राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान – 2005
10. राजस्थान शिक्षा अनुसंधान – 2006

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

11.शिक्षा समस्या विशेषांक – साहित्य परिचय, 1969

12.शिविरा अक्टूबर – 2002